रागिणी / भगत सिंह का अदालत में बयान

रामधारी खटकड़

भगतसिंह न्यूं बोल्या जज तै, फांसी तै ना डरते रै
देश की खातर जान देणियें, मरकै भी ना मरते रै...(टेक)
खून-खराबा काम नहीं म्हारा, दूर जुलम को करणा सै
मातृभूमि लागै प्यारी, इसकी खातर मरणा सै
अंग्रेजों से ताज छीन कै, हिन्द के सिर पै धरणा सै
मेहनतकश हो सुखी जगत म्हं, इसका दुखड़ा हरणा सै
शोषण को मिटावण का आह्वान जगत म्हं करते रै...
देश की खातर जान देणियें, मरकै भी ना मरते रै...
माणस नै जो माणस लूटै, कति देश तै प्यार नहीं
जो जनता पै जुलम करै, चाहिए वो सरकार नहीं
आम आदमी सब समझै, मूरख कोय नर-नार नहीं
हिन्दू-मुस्लिम एक सैं सारे, आपस म्हं तकरार नहीं
फूट गेर कै तुम जनता म्हं, फेर हकूमत करते रै...
देश की खातर जान देणियें, मरकै भी ना मरते रै...
अंग्रेजां नै म्हारे देश की कर दी रे - रे माट्टी
जुल्म देख कै जनता ऊपर, मन म्हं होई उचाटी
देश की धरती रोवण लाग्गी, क्यूं ना बेड़ी काट्टी
ईब हुक्म ना चलै तुम्हारा, सारी जनता नाट्टी
जुल्मी तै हम टक्कर लेंगें, ना घूंट सबर की भरते रै...
देश की खातर जान देणियें, मरकै भी ना मरते रै...
किते-किते गोदाम सड़ैं, किते भूखे बच्चे बिलकैं रै
कितनी कलियां मुरझाई सैं, बीच आधम म्हं खिलकै रै
बेचण लगे दलाल देश को, गोरयां गेल्यां मिल कै रै
विचार करो इब देशवासियो, एक सलाह म्हं चल कै रै
रामधारी कह वीर बणो, क्यूं ठण्डी आहें भरते रै...
देश की खातर जान देणियें, मरकै भी ना मरते रै...

व्यंग्य समझदार की मौत है

भोलेन्द्र विक्रम सिंह

आधा सावन बीत गया। न बारिस, न पटोहा, न कजरी, न मेहंदी, न चूड़ियों की खनखन, न कोई मीत, न किसी का इंतजार, न दिले वेकरार। न अब कोई बेला अपने हांथों की मेंहदी में 'K' लिख रही है न ही कोई राधे सफेदा के पेड़ पर खुरपी से 'N' लिख रहा है। ये कैसा सावन है जिसमें केवल निराश रोजगार, हताश जवानी, उदास बुढापा... मास्क, सेनेटाइजर, पॉजीटिव-नेगेटिव के बीच दो कौड़ी के रोग के कारण लाखों का सावन बीत जा रहा है।

पांडे काका भी सावन में साधू हो गए हैं। एक लोटा जल पीपल पर रोज चढ़ाते हैं। आज चढ़ाकर लौट रहे थे तो रास्ते में डबल स्टैंड पर खड़ी एक बुलेट दिखी...उस पर एक महात्मा हेलमेट की जगह मुकुट पहने बैठे हैं...आँखों में गोल्डन फ्रेम रेवैन...पैरों में अंडर आर्मर का लांग बूट...गले में गुजराती गमछा...गमछे का एक सिरा हाथ में..भव्य आकार...काका डरते डरते पूछे...भाई साहब आप?

...मैं ब्रम्हापुत्र नारद हूँ... आपके लोक में भ्रमण हेतु आया हूँ, चलिए मेरे साथ। काका भी बहुत दिनों से ऊबे थे, कूद कर लोटा सहित बुलेट पर बैठ गए। बुलेट हवा में।

ये लोग मुँह में क्या लगाए हैं?...महराज ये मास्क है... अच्छा तो क्या इसको लगाने से कोरोना नहीं होता?...महराज इसको तो आपके बप्पा ही बता सकते हैं। यहां तो बड़ी कन्फ्यूजन है...अब पूरे मुंह पर लैमिनेशन कराने की बात चल रही है।

कुछ दूर जाने पर लम्बी-लम्बी लाइनें दिखी। नारद बोले... इतनी भीड़...काका-मदिरा है महराज, नरक का अमृत..टेस्ट करेंगे?...नहीं..मेरे सावन चल रहें हैं, लॉकडाऊन में भी खुली हैं इससे कोरोना में कुछ लाभ मिलता है क्या?...काका...जी महराज, इसको पीने वाला खुद को कोरोना से लड़ने में सक्षम मानता है और सरकार कोरोना से लड़ने में खुद को सक्षम बनाती है।

हरि के द्वार में घुसते ही नीचे देखकर नारद बोले ये हमारे पापा की शक्ल-सूरत का कौन है?..काका...महराज ये बाबा रामदेव हैं। ये सदैव इसी तरह नहीं रहते कभी कभी सलवार भी पहन लेते हैं...अम्बानी के मामा के लड़के हैं... योग से योग करके अरबों की कंपनी खड़ी किये हैं। दुनिया में कोरोना की दवा सबसे पहले यही खोजे हैं, बाकी सारी दुनिया अभी भी खोज रही है। बुलेट नोएडा के ऊपर पहुंची ही थी...नारद पूछे..पांडे ये लोग क्यों इतना चीख-चिल्ला रहें हैं...काका लोटे को मजबूती से पकड़कर बोले...महराज आप ही का तो बिभाग है...ये मीडिया की भारतीय मंडी है...नारद मुस्कुराये...काका का हौसला बढ़ा...महराज ये पीले सूट-खुले बाल वाली स्वेता सिंह हैं, ये भारत को खबरदार कर रहीं हैं। ये चीनी सैनिकों को दूर से देख कर उनकी हर गतिविधि को यहां के फौजियों को बता देती हैं और भारत जीत जाता है...नारद..पर ऊपर से तो चीन भारी दिखता है...यही भ्रम तो ये दूर कर रहीं हैं। ये इटली का कोट पहने शर्मा जी की अदालत है यहां पूरी सरकार बरी कर दी जाती हैं...ये अंग्रेजी वाले चश्मिश गोस्वामी जी हैं इनका काम है पाकिस्तान और चीन को भारत से हराना...अमेरिका को ट्राई नहीं किये हैं बस...ये भाई साहब उदास क्यों हैं?...कौन ये?...ये पंकज उदास के भाई हैं रवीश उदास...इनकी मुख्य खबर यही है कि कोई खबर मत देखो..केवल इनको देखो।

नारद महराज अचानक बुलेट रोक देते हैं...ये गुरुकुल में बिना शिष्यों के आचार्य लोग क्या कर रहें हैं...इतना सुनते ही काका का गला भर्रा उठा...उदास हो बोले...महराज इनकी दशा न पूछो..ये बेसिक के टीचर हैं...पिछले कुछ महीनों से इनके जीवन से आनन्द का हर कतरा निचोड़ा जा रहा है। काका लोटे में पानी की बची बूंदों को जिह्वा पर टपका कर ठण्डे हुये...फिर बोले...पूरा बिभाग व्हाट्सएप से चल रहा है...रोजाना दस-बीस आपस में उलझे हुए आदेशों को सुलझाने के चक्कर में शिक्षकों की लंका लगी हुई है...नारद द्रवित हो बोले...ये कान में क्या लगाए हैं... महराज ये ऑनलाइन ट्रेनिंग द्वारा शार्प किये जा रहें हैं ताकी स्कूल खुलते ही बच्चों में ज्ञान उड़ेल सकें... इस समय दुनिया का सबसे तेज चलने वाला बिभाग बेसिक है महराज।

नारद गम्भीर हुए...काका ने पूछा... स्वर्ग में भी इंटरनेट है महराज? नारद ने उत्तर नहीं दिया...काका पारा मोड़ पर दो समोसा खिलाकर नारद को बिदा किये...और नारद भी जाते-जाते काका का लोटा मांग ले गए।

एको सिस्टम यानी हमारी प्रकृति का पारिस्थितिकी तंत्र कैसे काम करता है, इसे अमेरिका के येलोस्टोन नेशनल पार्क के उदाहरण से समझना चाहिए

सिद्धार्थ ताबिश

चूँकि हमारा एको सिस्टम एक जटिल कार्यप्रणाली है जिसे आप अपनी आखों से देखकर कभी समझ नहीं सकते हैं..

आप ये कभी नहीं समझ पायेंगे कि जंगल, मैदान, नदी, पेड़ पौधे और जानवर कैसे मिलकर हमारे पारिस्थितकी तंत्र का निर्माण करते हैं,

इसलिए इसे आपको इस उदाहरण से समझना होगा।

अमेरिका का येलोस्टोन नेशनल पार्क दुनिया का सबसे बड़ा संरक्षित वन्य जीवन का स्थान है..

लगभग नौ हज़ार स्क्वायर किलोमीटर के दायरे में फैला ये वन्य जीवन क्षेत्र पच्चीस साल पहले तक अपने जर्जर होते पारिस्थितिकी तंत्र से जूझ रहा था..

अमेरिका में बर्फ़ में रहने वाले सफ़ेद भेड़ियों के शिकार पर कोई रोक नहीं थी इसलिए लोगों ने इन भेड़ियों को मार मार के लगभग ख़त्म कर डाला..

येलोस्टोन नेशनल पार्क से भेड़ियों समेत तमाम प्रजातियाँ धीरे धीरे समाप्ति के कगार पर पहुँच रही थीं।

तभी वहां की जनता की तमाम मांग और विरोध पर अमेरिकी सरकार ने भेड़ियों को संरक्षित प्राणी की सूची में सम्मिलित किया..

और फिर 1995 में कनाडा से महज़ 31 भेड़िये येलो स्टोन नेशनल पार्क में ला कर छोड़े गए..

सरकार ने ये सोचकर भेड़ियों को वहां छोड़ा ताकि अपनी जनता को दिखा सकें कि वो भेड़ियों को दुबारा बसा रहे हैं..

मगर इन भेड़ियों की वजह से पार्क में जो कुछ भी हुआ उससे प्रकृति वैज्ञानिकों की आखें खुली की खुली रह गईं।

भेड़िये दुनिया के सबसे समझदार शिकारियों में से एक माने जाते हैं..

भेड़ियों ने पार्क में आते ही अपना काम शुरू कर दिया..

बेतहाशा बढ़ चुकी 卐शाकाहारी卐 प्रजातियों के लिए भेड़िये एक मुसीबत की तरह आये..

येलोस्टोन में बारहसिंघों की आबादी इतनी ज्यादा हो चुकी थी कि उसकी वजह से तमाम अन्य जीवों के लिए भोजन की उपलब्धता में भारी कमी हो गयी थी..

इन भेड़ियों ने पहले बीमार, और कुपोषित बारहसिंघों को मारना शुरू किया..

क्यूंकि ये आसानी से उपलब्ध थे..

भेड़िये इतने समझदार जीव होते हैं कि सर्दी के मौसम में जब खाने की कमी होती है तो वो गायों की जगह भैंसों को मारना शुरू करते हैं और गायों को अपनी आबादी बढ़ाने देते हैं..

ये मौसम के हिसाब से अपना खाना चुनते हैं जिसकी वजह से जंगल में शाकाहारी जीवों की आबादी का संतुलन बना रहता है।

येलोस्टोन में जब भेड़िये आये तो उनकी वजह से बारहसिंघे नदी के किनारों को छोड़कर जंगल के बीच भाग गए..

अन्य शाकाहारी भी सुदूर जंगलों में भाग गए..

उस से हुआ ये कि नदी के किनारों पर जो वनस्पति और पेड़ शाकाहारियों द्वारा पूरी तरह से ख़त्म कर दिए गए थे वो उग कर बड़े होने लगे..

पेड़ बड़े हुवे तो तमाम चिड़ियाँ वापस आयीं..

नदी किनारे के पेड़ बड़े हुवे तो ठन्डे वातावरण वाले उदबिलाव वापस आये.. उदबिलाव (ब्क्द्ध्ड्ड1द्गह्) सर्दियों में शिकारियों से अपने खाने को बचाने के लिए नदी में एक बाँध का निर्माण करते हैं..

जिसे Beaver Dam बोला जाता है..

उसमें ये नदी किनारे लगे वृक्षों से टहनियां तोड़ तोड़ कर लाते हैं और पेड़ के लट्ठों का पूरा जाल बना कर ऊपर से कीचड़ लगा कर नदी का बहता पानी रोककर एक तालाब जैसा बना देते हैं..

इस तालाब में ये उदबिलाव सर्दियों के लिए अपना खाना सुरक्षित रखते हैं..

उदबिलाव जो बाँध बनाते हैं उस से तमाम तरह की मछलियों के प्रजनन में आसानी होती है..

जिन मछलियों के अंडे नदी की तेज़ धारा में बह जाते थे वो उदबिलाव के बाँध से रुक गए और नदियों में मछलियों की संख्या में तेज़ी से वृद्धि हुई..

जब मछलियाँ बढीं तो भालू वापस आ गए..

ऐसे तमाम वो जीव जो वापस दूसरी जगह चले गए थे सब वापस आ गए क्यूंकि

नदी के किनारों के क्षेत्र हरे भरे हो गए

उन 31 भेड़ियों की वजह से येलो स्टोन नेशनल पार्क का एको सिस्टम जो पूरी तरह तबाह होने की कगार पर था.. वापस लौट आया..

और ये सब सिर्फ 25 साल के भीतर हो गया.. अब वहां भेड़ियों की तादात 500 के आसपास हो चुकी है और बारहसिंघे, गाय, भैंस और बाक़ी सारे शाकाहारियों की जनसंख्या नियंत्रण में है जिसकी वजह से वो पार्क अब पूरी तरह से फल फूल रहा है

हमारा पारिस्थितिकी तंत्र ऐसे काम करता है..

खूंखार माँसाहारी जानवर जिस भी क्षेत्र से गायब हो जाते हैं, वहां का पर्यावरण संतुलन पूरी तरह से बिगड़ जाता है.. क्यूंकि ये जानवर ही पारिस्थितिकी तंत्र के शिखर पर बैठकर वनस्पतियों और नदियों की रक्षा करके दूसरे अन्य जीवों को पनपने का अवसर प्रदान करते हैं

कितनी अजूबी है हमारी प्रकृति..

मगर इसे हम अपनी मानव भावनाओं के द्वारा कभी समझ नहीं सकते हैं.. पारिस्थितिकी तंत्र को समझने के लिए हमें प्रकृति के हिसाब से सोचना होगा..

जो जैसा है उसे हमें वैसा देखने की समझ विकसित करनी पड़ेगी..

भारत के तमाम इलाके इस समय भयंकर रूप से अपने ख़राब और दम तोड़ते एको सिस्टम से जूझ रहे हैं..

हमारी बस यही दुवा होनी चाहिए कि ये प्रकृति हमारे बुद्धिहीन नेताओं और जनता को समझ दे ताकि ये लोग इस देश के जंगल, खेत और एको सिस्टम को बचा सकें